ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय

कामेश्वरनगर, दरभंगा

पी-एच.डी. उपाधि हेतु प्रस्तावित मानविकी संकाय (मैथिली) विषयक

शोध-प्रारूप

प्रस्तावित शोधक विषय –

"राजमोहन झाक मैथिली ओ काशीनाथ सिंहक हिन्दी कथाक तुलनात्मक अध्ययन"

शोध-निर्देशक

डा. सुरेन्द्र भारद्वाज

सहायक प्राचार्य

मैथिली विभाग

चन्द्रधारी मिथिला महाविद्यालय, दरभंगा

(ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय,

कामेश्वरनगर दरभंगा- 846004)

शोधार्थी

Rahul Raj Gupta 05/04/24

राहुल राज गुप्ता

यू.जी.सी-नेट-जे.आर.एफ.

BR07000234

पैट क्रमांक- E2211010

ग्राम+पोस्ट- बनौल

थाना- नानपुर

जिला- सीतामढ़ी

पिन कोड- 843326

Scanned with CamScanner

प्रस्तावित शोध-शीर्षक :

"राजमोहन झाक मैथिली ओ काशीनाथ सिंहक हिन्दी कथाक तुलनात्मक अध्ययन"

1. प्रस्तावना :

राजमोहन झा आधुनिक मैथिली साहित्यक एकटा सशक्त कथाकार छथि, हिनक कथा-साहित्यमे सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक एवं सांस्कृतिक यथार्थक अत्यन्त गहन, संवेदनात्मक ओ कलात्मक चित्रण प्रौढ़ताक संग कएल गेल अछि। राजमोहन झाक कथा-साहित्यमे शहरमे बसल निम्न-मध्यमवर्गक परिवारक वर्णन भेटैत अछि। आ, काशीनाथ सिंह अपन कथा-साहित्यमे ग्रामीण जीवनक यथार्थ, नगरक दिस पलायन, जातिवाद, अवसरवाद आदि विभिन्न पक्षकेँ यथार्थक स्तरपर उजागर कएने छथि।

मैथिलीक स्थापित ओ सुप्रसिद्ध साहित्यकार राजमोहन झाक व्यक्तित्वक विकास साहित्यकारक परिवारमे भेलनि, मुदा हिन्दीक साहित्यकार काशीनाथ सिंहक व्यक्तित्वक विकास निम्न-

Self Attested
Rahul Raj Gupta.
05/04/24

Scanned with CamScanner

मध्यवर्गीय परिवारमे भेलनि जतय साहित्यिक परिवेशक अभाव छल।

2. शोध-विषयक महत्त्व :

प्रस्तुत शोध स्वाधीन भारतमे मैथिली ओ हिन्दी साहित्यक विकासक एक पक्षक अन्वेषण एवं अनुशीलनसँ संबंधित अछि। साहित्य अपन कालक प्रतिबिम्ब होइत अछि आ साहित्यक सम्बन्ध समाजसँ अछि। वास्तवमे विविध समस्या, संघर्ष आ द्वंद्व तत्कालीन साहित्यमे अभिव्यक्त होइत रहल अछि। विशेषतः 'कथा-साहित्य'मे संदर्भक संग समस्या निरन्तर अपन जगह बनबैत रहल अछि। एहिलेल कथा-साहित्यकें सशक्त विधामे परिगणित कएल जाइत अछि, जकर सहायतासँ यथार्थकें गहनतासँ व्यक्त कएल जा सकैत अछि। एहिमे समस्त सामाजिक, राजनैतिक, आर्थिक, धार्मिक ओ वैयक्तिकहु यथार्थक ग्रंथिकें उघाड़ि कए सभक सोझाँ यथावत रूपें स्थापित करबाक प्रबल शक्ति होइत अछि। कथाकें मानवीय संवेदनाकें स्पष्टतः अभिव्यक्त करबाक एक उत्तम माध्यम मानल जाइत रहल अछि। किएक तँ ई युग-चेतनाक संवाहक मात्र नहि

Self Attested
Rahul Raj Lwp19.
05/04/24

Scanned with CamScanner

होइत अछि, अपितु युगक गतिशील पृष्ठभूमिपर जन-जीवनकँ कुशल मार्गदशन सेहो करैत अछि।

3. शोधक उद्देश्य :

राजमोहन झाक मैथिली ओ काशीनाथ सिंहक हिन्दी कथाक विभिन्न पक्षक विस्तृत रूपेँ तुलनात्मक पद्धतिक माध्यमसँ एखनधरि कोनो शोध-कार्यक दृष्टिसँ अध्ययन-अवलोकन नहि भेल अछि। राजमोहन झा ओ काशीनाथ सिंहक कथा-साहित्यमे विभिन्न पक्षक तुलनात्मक पद्धतिक अनुशीलन एकर उद्देश्य अछि। एहिसँ भविष्यमे छात्र-छात्राक लेल ई शोध-कार्य अत्यधिक महत्त्वपूर्ण ओ उपयोगी सिद्ध होएत। तुलनात्मक अध्ययन ओ अवलोकनसँ समानान्तर लेखनमे कथाक विकासक पता चलत संगहि एकहि विधामे लिखित दू-भाषाक समता-विषमतापर प्रकाश पड़त। एतदर्थ राजमोहन झाक मैथिली ओ काशीनाथ सिंहक हिन्दीक सम्पूर्ण कथा-साहित्यकँ अत्यन्त विस्तृत फलकपर जाँच-परखबाक मूल प्रयास एकर उद्देश्य होएत।

Self Attested
Rahul Raj Gupta.
05/04/24

Scanned with CamScanner

4. शोधक स्रोत एवं प्रविधि :

राजमोहन झा ओ काशीनाथ सिंहक कथाकें बुझबाक लेल सर्वप्रथम साहित्यिक अवधारणा, वैचारिक परिधि, कथाक सिद्धांत, कथाक अवयव आदिकें जानबाक प्रयास कएल जाएत। तत्पश्चात् प्रस्तुत शोध-कार्यसँ संबंधित आन भाषा-साहित्यमे पूर्वमे भेल शोध-कार्यक गहनतासँ अध्ययन कएल जाएत।

एहि शोध कार्यक मदतिमे मैथिली ओ हिन्दीक महत्त्वपूर्ण कथासँ सम्बन्धित पत्र-पत्रिका, इनटरनेट आदिक माध्यमसँ आवश्यक सहायता लेल जाएत। कोनो सरकारी ओ निजी संस्थागत पुस्तकालयक सहयोग लेब सेहो अपेक्षति होएत। हमर प्रस्तावित शोध विषयक केन्द्रमे जे-जे उपयोगी ओ महत्त्वपूर्ण पोथी सभ उपलब्ध होएत तकर उल्लेख आवश्यक रूपसँ शोध-प्रबंधमे कएल जाएत। संगहि संबंधित सम्पूर्ण विषयक अनुसंधान ओ आलोचना सेहो उपस्थित कएल जाएत।

जीवन-सत्यक अनुभूतिक दोसर नाम थिक- यथार्थ। तें कोनो साहित्यकारक जे अपन व्यक्तित्व होइछ, से हुनक रचनामे

Self Attested
Rahul Raj Gupta.
05/04/24

Scanned with CamScanner

समाहित रहैत अछि। साहित्यक क्षेत्रमे परस्पर दू भाषाक साहित्यकारकें यथार्थ रूपसँ देखबाक होइछ, तँ सहजहि तुलनात्मक पद्धतिक मार्गपर चलि चिंतनशील, मननशील ओ संवेदनशील होएब आवश्यक भए जाइछ।

तुलना करब मानवक स्वभाव अछि। मनुक्ख कोनो-ने-कोनो रूपें एक दोसराक तुलना करैत रहैत अछि। कोनो प्राणी वा वस्तुक गुण ओ अवगुणक विवेचन तुलनात्मक पद्धतिसँ कएल जाइत अछि। एहि लेल साहित्यहुमे तुलनात्मक पद्धतिक बहुत महत्त्व अछि। तें शोधक क्षेत्रमे तुलनात्मक कार्यक महत्त्व आओर बेसी बढ़ि जाइत अछि।

दू वा दूसँ अधिक साहित्यकारक समानता ओ असमानताक तुलनात्मक अध्ययन कएल जा सकैत अछि। तें इहो कहि सकैत छी जे दू वा दूसँ अधिक साहित्यकारक कोनो विशेष क्षेत्रमे तुलनात्मक पद्धति द्वारा अध्ययन करब मुल्यांकनक श्रेष्ठताकें देखबैत अछि।

Self Attested
Rahul Raj Gupta
05/04/24

Scanned with CamScanner

तुलनात्मक अध्ययनक अन्तर्गत दू अलग-अलग भाषामे रचित साहित्यक वा एकहि भाषाक दू वा दूसँ अधिक साहित्यकारक विभिन्न क्षेत्रमे साम्य, वैषम्य प्रवृत्तिक तुलनात्मक अध्ययन विस्तृत कलात्मकता ओ वैचारिकताक संग कएल जाइत अछि। हमर प्रस्तावित शोधक शीर्षकक तुलनात्मक पद्धतिक अन्तर्गत विवेचन ओ विश्लेषण उक्त प्रक्रियासँ कएल जाएत। एहि क्रममे सूक्ष्म ओ गहन अध्ययन-विश्लेषण कए विविध पक्षकें सोझाँमे आनब महत्वपूर्ण कार्य होएत।

5. शोधक कार्य-प्रणाली :

"राजमोहन झाक मैथिली ओ काशीनाथ सिंहक हिन्दी कथाक तुलनात्मक अध्ययन" हमर शोधक मुख्य विषय अछि। एहि शोध कार्य-प्रणालीक अन्तर्गत राजमोहन झा ओ काशीनाथ सिंहक जीवन ओ साहित्य, 'कथा-साहित्य'क विषय-वस्तु, भाषा-वैशिष्ट्य आदिपर सूक्ष्मताक संग अवलोकन-विश्लेषण आवश्यक होएत। दुनू साहित्यकारक कथामे विविध पक्षपर विचार ओ अध्ययन कएल जाएत।

Self Attested
Rahul Raj Gupta
05/04/24

Scanned with CamScanner

6. प्रस्तावित शोध-प्रबंधक संभावित रूपरेखा :

प्रस्तावित शोध-प्रबंधक विषय "राजमोहन झाक मैथिली ओ काशीनाथ सिंहक हिन्दी कथाक तुलनात्मक अध्ययन" कैं निम्नलिखित अध्यायमे विभाजित करबाक योजना अछि, मुदा एहि विषयक सामग्रीक उपलब्धता ओ अध्ययनक आधारपर अंतर-विषयमे परिवर्तनक अवकाश रहत।

प्रस्तावना :

प्रथम अध्याय : राजमोहन झा ओ काशीनाथ सिंहक जीवन ओ साहित्य

द्वितीय अध्याय : राजमोहन झा ओ काशीनाथ सिंहक 'कथा-साहित्य'क विषय-वस्तु।

तृतीय अध्याय : राजमोहन झा ओ काशीनाथ सिंहक 'कथा-साहित्य' मे सामाजिक एवं सांस्कृतिक पक्षक अनुशीलन।

चतुर्थ अध्याय : राजमोहन झा ओ काशीनाथ सिंहक 'कथा-साहित्य'मे राजनीतिक एवं आर्थिक स्वरूप।

Self Attested
Rahul Raj Gupta.
05/04/24

Scanned with CamScanner

पंचम अध्याय : राजमोहन झा ओ काशीनाथ सिंहक 'कथा-साहित्य'मे भाषा-वैशिष्ट्य।

उपसंहार :

परिशिष्ट :

अधीत ग्रंथक सूची :

7. शोध-प्रबंधक अध्यायक संक्षिप्त वर्गीकरण :

प्रस्तावना :

"राजमोहन झाक मैथिली ओ काशीनाथ सिंहक हिन्दी कथाक तुलनात्मक अध्ययन" शीर्षक शोध-प्रबंधमे दुनू साहित्यकारक सम्पूर्ण कथाक विविध पक्षपर चर्चा करैत ओहिपर विशेष प्रकाश देल जाएत। विविध पक्षक संग महत्त्वक अनुशीलन ओ विवेचन कएल जाएत।

प्रथम अध्याय :

एहि अध्यायमे राजमोहन झा ओ काशीनाथ सिंहक जीवन-परिचय, रचना-संसार, वैचारिक परिधि आदिकें ध्यानमे राखि

Self Attested
Rahul Raj Gupta.
05/04/24

Scanned with CamScanner

हुनक सम्पूर्ण जीवन ओ साहित्यपर विवेचन ओ विश्लेषण कएल जाएत।

द्वितीय अध्याय :

एहि अध्यायमे राजमोहन झा ओ काशीनाथ सिंहक 'कथा-साहित्य' मे विविध तत्त्वकेँ ध्यानमे राखि कए कथाक विषय-वस्तुपर विस्तृत रूपेँ विवेचन ओ विश्लेषण कएल जाएत।

तृतीय अध्याय :

एहि अध्यायमे राजमोहन झा ओ काशीनाथ सिंहक कथामे निहित सामाजिक एवं सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्यमे तुलनात्मक अध्ययनक फलस्वरूप तकर विवेचन ओ विश्लेषण कएल जाएत।

चतुर्थ अध्याय :

एहि अध्यायमे राजमोहन झा ओ काशीनाथ सिंहक कथामे राजनीतिक ओ आर्थिक स्वरूपक तुलनात्मक निदर्शन करबैत तकर व्यापक विवेचन ओ विश्लेषण कएल जाएत।

Self Attested
Rahul Roy Gupta.
05/04/24

Scanned with CamScanner

पंचम अध्याय :

एहि अध्यायमे राजमोहन झा ओ काशीनाथ सिंहक कथाक भाषा-शैली, भाषागत-वैशिष्ट्य, एवं भाषागत विविध पक्षक प्रवृत्तिकेँ निष्कर्षक रूपमे देखाओल जाएत।

उपसंहार :

उपसंहारमे पाँचो अध्यायमे भेल विवेचन-विश्लेषणक समाहार प्रस्तुत कएल जाएत। एकर अतिरिक्त विभिन्न अध्यायक अन्तर्गत शोध कार्यमे आयल नवीन एवं विशेष विचार, तथ्य आदिकेँ निष्कर्ष रूपमे एहि शीर्षकक अन्तर्गत राखल जाएत। जाहिसँ शोध-प्रबंधक महत्त्व, वैशिष्ट्य, प्रयोजन एवं उपादेयता सिद्ध होएत।

अधीत ग्रंथक सूची :

मैथिली -

1. मिश्र डॉ. जयकान्त, मैथिली साहित्यक इतिहास, साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण- 1998

2. 'श्रीश' डॉ. दुर्गानाथ झा, मैथिली साहित्यक इतिहास, जेनरल बुक एजेन्सी, पटना, पाँचम संस्करण : 2023-2024

Self Attested
Rahul Raj Gupta
05/04/24

Scanned with CamScanner

3. 'व्यथित' डॉ. बाल गोविन्द झा- मैथिली साहित्यक इतिहास, मिथिलांचल प्रकाशन, दरभंगा, द्वितीय संस्करण : 1988

4. झा राजमोहन, एक आदि एक अन्त, सुधा प्रकाशन, दरभंगा, प्रथम संस्करण : 1965

5. झा राजमोहन, झूठ साँच, भारती प्रकाशन केन्द्र, दरभंगा, प्रथम संस्करण : 1972

6. झा राजमोहन, एकटा तेसर, मैथिली अकादमी, पटना : 1984

7. झा राजमोहन, आइ काल्हि परसू, अप्पन प्रकाशन, पटना : 1993

8. झा राजमोहन, अनुलग्न, अप्पन प्रकाशन, पटना : 1996

9. झा राजमोहन, अभियुक्त, राजकमल प्रकाशन, पटना :

10. झा राजमोहन, अभियुक्त, निष्कासन, विस्थापित इत्यादि-इत्यादि, राजकमल प्रकाशन, पटना

11. झा राजमोहन, भनहि विद्यापति, वाग्मिता प्रकाशन, पटना : 1992

12. झा राजमोहन, टिप्पणीत्यादि, वाग्मिता प्रकाशन, पटना : 1992

13. झा राजमोहन, गल्तीनामा, वाग्मिता प्रकाशन, पटना : 1983

Self Attested
Rahul Roy
05/03/24

Scanned with CamScanner

14. प्रो. ठाकुर वीणा, वाणिनी, मिथिला रिसर्च सोसाइटी, दरभंगा : 2010

15. प्रो. ठाकुर वीणा, इतिहास-दर्पण,

मैथिली पत्रिका :

1. संपादक - मिश्र कृष्णकान्त, वैदेही, पाक्षिक, सीतामढ़ी : 1950

2. संपादक - 'शास्त्री' झा हीरानन्द, मिथिला मिहिर, मासिक, पटना : 1984-85

हिन्दी :

1. सिंह डॉ. काशीनाथ, लोग बिस्तरों पर, अभिव्यक्ति प्रकाशन, दिल्ली : 1968

2. सिंह डॉ. काशीनाथ, सुबह का डर, रचना प्रकाशन, इलाहाबाद : 1975

3. सिंह डॉ. काशीनाथ, आदमीनामा, प्रकाशन संस्थान, दिल्ली : 1978

4. सिंह डॉ. काशीनाथ, नई तारीख, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली : 1979

5. सिंह डॉ. काशीनाथ, कल की फटेहाल कहानियाँ, प्रतिमान प्रकाशन, इलाहाबाद : 1980

Self Attested
Rahul Raj Gupta.
05/04/24

Scanned with CamScanner

6. सिंह डॉ. काशीनाथ, प्रतिनिधि कहानियाँ, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली : 1982

7. सिंह डॉ. काशीनाथ, सदी का सबसे बड़ा आदमी, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली : 1986

8. सिंह डॉ. काशीनाथ, दस प्रतिनिधि कहानियाँ, किताब घर, नई दिल्ली : 1994

9. सिंह डॉ. काशीनाथ, कहानी उपख्यान (सम्पूर्ण कहानियाँ), राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली : 2004

10. नूरजहाँ, हिन्दी कहानी में यथार्थवाद, अभिनव भारती प्रकाशन, इलाहाबाद : 1976

11. भारती धर्मवीर, मानव मूल्य और साहित्य, लोक भारती प्रकाशन, इलाहाबाद : 1980

12. राकेश मोहन, साहित्य और संस्कृति, राधाकृष्णन प्रकाशन, नई दिल्ली : 1987

13. तिवारी डॉ. रामचन्द्र, हिन्दी का गद्य-साहित्य, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी, पन्द्रहवाँ संस्करण : 2024

Rahul Raj Gupta
05/04/24

Scanned with CamScanner

14. शंकर डॉ. विवेक, गद्य-साहित्य, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर, सप्तम संस्करण : 2023

हिन्दी पत्र-पत्रिका :

1. सम्पादक- पल्लव, बनारस, सम्भावना संस्थान, चित्तौरगढ़, प्रवेशांक, बसन्त : 2008
2. सम्पादक- हुसैन ए., सम्बोधन, कांकरोली, राजस्थान, अंक- जनवरी-मार्च : 2007
3. सम्पादक- शैली शैलेन्द्र कुमार, राग भोपाली, भोपाल, अंक- जनवरी : 2007
4. सम्पादक- प्रकाश स्वयं, शर्मा राजेन्द्र, प्रगतिशील वसुधा, भोपाल के विभिन्न अंक।
5. सम्पादक- सिंह नामवर, आलोचना, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, मार्च-जून : 2007, जुलाई-सितम्बर : 2008 के अंक।

'शोध-निर्देशक'क हस्ताक्षर

डा० सुरेन्द्र भारद्वाज
स० प्रा० मैथिली विभाग
सी० एम० कालेज, दरभंगा

Rahul Raj Gupta 05/04/24
'शोधार्थी'क हस्ताक्षर

Scanned with CamScanner